कार्यक्रम : एक दृष्टि में

इसमें राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियां, व्याख्यान, पैनल डिस्कशन आदि आयोजित होंगे और हिन्दी विज्ञान लेखकों को सम्मानित करने के साथ विज्ञान सम्बन्धी पत्र–पत्रिकाओं के विमोचन होंगे। इस परिसंवाद में हिन्दी विज्ञान लेखन करने वाले लेखकों, प्रकाशकों एवं संस्थाओं के प्रकाशनों की प्रदर्शनी लगाई जायेगी तथा लोकप्रिय विज्ञान संचार के कार्यक्रमों का प्रदर्शन भी किया जायेगा।

स्मारिका में प्रकाशन हेतु प्रतिभागी दिनांक 25 सितंबर तक अपने शोध लेख अवश्य मेल कर दें । शोध लेख कृतिदेव फांट में अंकित होना चाहिए।

प्रतिभाग

वैज्ञानिक, विज्ञान लेखक, विज्ञान पत्रकार, शिक्षक, विद्यार्थी व विज्ञान लोकप्रियकरण में रूचि रखने वाले भाग ले सकते हैं। सम्मेलन में प्रतिभाग पूर्णतया निःशुल्क है। पूर्व सूचना के आधार पर बाहर के प्रतिभागियों के आवास की व्यवस्था रहेगी। इसके लिए कार्यक्रम के वेबस्थान www.vigyanlekhan.com पर आगमन–प्रस्थान का विवरण भरना होगा।

पंजीकरण

पंजीकरण के समय प्रतिभागी अपना पूर्ण विवरण अंकित करें। पंजीकरण की अंतिम तिथि 25 सितंबर, 2019 है। अन्य किसी प्रकार की पूछताछ के लिए राष्ट्रीय विज्ञान लेखक सम्मेलन के ई–पते पर लिख सकते हैं और संपर्क भाष पर पूछ सकते हैं ।

आयोजन स्थल :

डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

लखनऊ शहर भारत के सर्वाधिक जनसंख्या वाले राज्य उत्तर प्रदेश की राजधानी है। यह शहर अपनी विशिष्ट सभ्यता एवं संस्कृति के लिए ऐतिहासिक रूप से अवध के नाम से भी जाना जाता है। शहर गोमती के किनारे बसा है। अक्टूबर माह में लखनऊ शहर का तापमान अधिकतम 33 एवं न्यूनतम 20 डिग्री के बीच रहता है।

डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ की स्थापना वर्ष 2008 में की गई। यह अपने ढंग का पहला ऐसा विश्वविद्यालय है जो कि दिव्यांग बच्चों को सर्वसमावेशी परिवेश में उच्च शिक्षा देने के लिए हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराता है। वर्तमान में यह विश्वविद्यालय, लखनऊ चारबाग रेलवे स्टेशन से 11 कि.मी. दूर मोहान रोड पर स्थित है। यहाँ पहुँचने के लिए चारबाग से बस द्वारा आलमबाग होते हुए जाते हैं।

मुख्य संरक्षक एवं मार्गदर्शक :

माननीय योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश
एवं अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान

संरक्षक : डॉ. राजनारायण शुक्ल
कार्यकारी अध्यक्ष, उ.प्र. भाषा संस्थान

संरक्षक : प्रो. राणा कृष्णपाल सिंह, कुलपति
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय

प्रो. मनोज पटेरिया, निदेशक,
राष्ट्रीय विज्ञान संचार एंव सूचना स्रोत संस्थान, नई दिल्ली

आयोजन समिति

संयोजक : डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह,
प्रोफेसर, हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

आयोजन सचिव : डॉ. वी.पी. सिंह, सचिव भारतीय विज्ञान लेखक संघ

समन्वयक : डॉ. वीरेन्द्र यादव, हिन्दी विभाग
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय

: आद्यादत्त त्रिपाठी,
कार्यकारी निदेशक, उ.प्र.भाषा संस्थान

आयोजक :

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान,
721–722, 7वाँ तल, इन्दिरा भवन, अशोक मार्ग, लखनऊ।
फोन : 0522–2288354, 9910777969, 9415050808, 9627343635, 7703009757
वेबसाईट : upbhashasansthan.in
ई–मेल : upbhashasansthan@gmail.com
कार्यक्रम वेबसाईट : www.vigyanlekhan.com
ई–मेल : rhvlsup@gmail.com

विज्ञान पुस्तक प्रदर्शनी

हिंदी व भारतीय भाषाओं में प्रदर्शित पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, सी डी, साफ्टवेयर्स, पोस्टरों आदि की प्रदर्शनी आयोजित की जा रही है। विज्ञान लेखक व प्रकाशक आमंत्रित हैं।

पोस्टर सत्र

प्रतिभागी विज्ञान के किसी विषय पर स्वरचित पोस्टर ला सकते हैं। इस सत्र में प्रमाण पत्र के साथ पुरस्कारों का भी प्राविधान है।

लोक माध्यम से विज्ञान संप्रेषण

इच्छुक प्रतिभागियों को लोक माध्यम से लोक भाषा में विज्ञान सम्प्रेषण के लिए अवसर प्रदान किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ

द्वारा

डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ

राष्ट्रीय विज्ञान संचार एंव सूचना स्रोत संस्थान, नई दिल्ली
इंडियन सांइस कम्यूनिकेशन सोसायटी
के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित

राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान लेखक सम्मेलन एवं परिसंवाद - 2019

'हिन्दी विज्ञान लेखन के विविध आयाम'

दिनांक : 11–12 अक्टूबर, 2019

उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान : परिचय

भाषा संस्थान उत्तर प्रदेश का एक अभिन्न उपक्रम है, जिसकी स्थापना वर्ष 1994 में की गई। इसका उद्देश्य भाषाओं एवं उनके साहित्य का अभिवर्धन है। प्राचीन काल से भारत बहुभाषी क्षेत्र रहा है। भारत के भाषिक यथार्थ का एक तथ्य यह भी है कि यहाँ भाषाओं से अधिक भाषाओं के नाम हैं। भिन्न भिन्न देश काल में विवर्तित होकर भाषाएं स्वतन्त्र नाम और रूप धारण कर लेती हैं। आजादी के बाद भारत की कुछ भाषाओं का राजभाषा के रूप मे अपनाया गया। आजादी के बाद भारत की कुछ भाषाओं को राजभाषा के रूप मे अपनाया गया। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में अब तक 22 भाषाएँ स्वीकृत हैं और कई अपनी उपस्थिति दर्ज कराने की प्रक्रिया में हैं। इन सबके बावजूद इन भाषाओं मे पारस्परिकता है। ये सभी भारतीय भाषाएँ सदैव एक दूसरे की अनुपूरक रही हैं । भाषा संस्थान इन विभिन्न भाषाओं के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से देश की सांस्कृतिक एकता के लिए लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सक्रिय है।

राष्ट्रीय परिसंवाद एवं हिन्दी विज्ञान लेखक सम्मेलन–2019

"हिन्दी विज्ञान लेखन के विविध आयाम"

विज्ञान की उपलब्धियां आधुनिक युग के विकास यात्रा की स्वर्णिम उपलब्धि है। आधुनिकता और विकास विज्ञान की उपलब्धियों के बिना असंभव है। विज्ञान की उपलब्धियों ने न केवल मानव जीवन को सुगम बनाया है अपितु सम्पूर्ण ब्रह्मांड और स्वयं को समझने की सर्वथा एक नयी दृष्टि दी है। विज्ञान का अधिकांश लेखन आज भी अंग्रेजी तक सीमित है। आभिजात्य दृष्टि और अंग्रेजी की बाजारवादी और औपनिवेशिक चिंतन ने देश की भाषाओं से इस विपुल ज्ञान सम्पदा को दूर रखने में कोई कमी नहीं छोड़ी है। वैश्वीकरण की उढ़ार नीतियों और उपलब्धियों से ज्ञान की सीमाएं टूटी हैं। आज दुनिया के एक छोर की सूचना दूसरे कोने तक पलक झपकते ही पहुँच रही है, किन्तु अपनी भाषा में विज्ञान की अनुपलब्धता आज भी खटकने वाली है। अपने ही समाज के कुछ लोग विज्ञान की उपलब्धियों से इसलिए उपेक्षित है क्योंकि उन्हें अंग्रेजी का ज्ञान नहीं है। अन्यान्य कारणों से अकादमिक जगत में सदियों में यह भ्रम स्थापित और पुष्ट हुआ कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान को समझना असंभव है। फिर यह प्रश्न स्वाभाविक है कि अपनी भाषा का अतिशय सम्मान करने वाले देश जापान, कोरिया, चीन, तथा फ्रांस आदि वैज्ञानिक आधार पर अपने को समुन्नत कैसे बना सके |समय आ गया है कि आज से इस भ्रम को तोड़ा जाए कि अपनी भाषा में विज्ञान को नहीं समझा जा सकता है।

लक्ष्योद्देश्य

हिन्दी में प्रभूत विज्ञान लेखन हो रहा है। लेकिन इसमें बिखराव है। हमारी भावी पीढ़ी अपनी भाषा में वैज्ञानिक चिंतन कर सके, विज्ञान को सोचे समझे, इस मन्तव्य के साथ हिन्दी विज्ञान लेखन को अकादमिक जगत में एक स्थान पर लाने, अकादमिक जगत और व्यावसायिक जगत के बीच वैज्ञानिक ज्ञान के सेतु बनाने एवं देश की भाषा में विज्ञान लेखन को प्रेरित और त्वरित करने की आकांक्षा से विज्ञान लेखकों का यह सम्मेलन आयोजित है। प्राथमिक तौर पर यह सम्मेलन हिन्दी विज्ञान लेखन पर केन्द्रित है, इसके समानान्तर भारतीय भाषाओं के विज्ञान लेखन पर चर्चा की अपेक्षा के साथ यह सम्मेलन आयोजित है।

भारतीय भाषाओंमेंविज्ञान लेखन वस्तुतः भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ आधुनिक विज्ञान का सेतु का निर्माण है, ज्ञान की अविरल धारा के विलुप्त अध्याय का पुनरावलोकन है। इस लक्ष्योद्देश्य के साथ वैज्ञानिकों एंव लेखकों का यह परिसंवाद आयोजित है। हिन्दी विज्ञान लेखकों का यह पवित्र संकल्प अधिक सघन हो, इस सम्मेलन का यही प्रयास होगा

उपविषयः–

- हिन्दी एंव भारतीय भाषाओं की विज्ञान शब्दावली
- विज्ञान लेखन की परंपरा एवं शब्द निर्माण
- विज्ञान लेखन में अवधारणाओं की अभिव्यक्ति
- अनुवाद और विज्ञान लेखन
- अनुप्रयुक्त शोध एवं तकनीक लेखन
- विज्ञान लेखन के विविध आयाम
- हिन्दी एंव भारतीय भाषाओं में विज्ञान प्रसार
- लोककलाएँ और विज्ञान
- मौलिक विज्ञान लेखन
- अनुप्रयुक्त विज्ञान लेखन
- वैज्ञानिक शोध और लेखन
- पर्यावरण विज्ञान लेखन
- वैज्ञानिक रचनात्मक लेखन
- विविध माध्यमों के लिए विज्ञान लेखन
- विज्ञान गल्प एवं विज्ञान का सृजनात्मक लेखन
- बाल विज्ञान लेखन
- कृषि विज्ञान लेखन
- चिकित्सा विज्ञान लेखन
- खगोल विज्ञान का हिन्दी लेखन
- सूचना प्रौद्योगिकी का हिन्दी लेखन
- मातृ भाषा में विज्ञान शिक्षण
- हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं में विज्ञान लेखन को समृद्ध करने वाली संस्थाओं का योगदान